इकाई 2 हिंदी काव्यशास्त्र का विकास : संदर्भ–रीतिकाल

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 रीतिकाल से पूर्व हिंदी में काव्यशास्त्रीय चिंतन

- 2.2.1 सूरदास
- 2.2.2 रहीम

2.3 रीतिकाल में काव्यशास्त्र का विकास

- 2.3.1 सर्वांग निरूपण : प्रमुख आचार्य एवं अवदान
- 2.3.2 रस-निरूपण : प्रमुख आचार्य एवं अवदान
  - सर्वरस निरूपण
  - नायक-नायिका भेद
- 2.3.3 अलंकार निरूपण : प्रमुख आचार्य एवं अवदान
- 2.3.4 छंद निरूपण : प्रमुख आचार्य एवं अवदान

2.4 सारांश

2.5 अवधारणात्मक शब्द

2.6 उपयोगी पुस्तकें

2.7 बोध प्रश्न

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप :

- रीतिकाल के पूर्व अर्थात् भक्तिकाल में हिंदी काव्यशास्त्र की स्थिति से परिचित होंगे,
- रीतिकाल में रस-निरूपण करने वाले आचार्यों के अवदान से परिचित होंगे,
- रीतिकाल में आचार्यों द्वारा किए गये रस-निरूपण के साथ-साथ नायक-नायिका भेद से परिचित होंगे।
- रीतिकाल में अलंकार-निरूपण करने वालों आचार्यों के अवदान से परिचित होंग; और
- रीतिकाल में छंद निरूपण करने वाले आचार्यां के अवदान से परिचित होंगे।

BHDC-106.indd 20 19-03-2021 08:51:33

2.1 प्रस्तावना

भारतीय काव्यशास्त्र की पहली इकाई में आप संस्कृत के आचार्यों द्वारा निरूपित काव्यशास्त्र का परिचय प्राप्त कर चुके हैं। अब इस इकाई में हिंदी के भक्तिकाल अर्थात् रीतिकाल से पूर्व हिंदी काव्यशास्त्र और मुख्य रूप से रीतिकाल के हिंदी काव्यशास्त्र की जानकारी प्राप्त करेंगे।

काव्यशास्त्र की रचना दो उद्देश्यों से की जाती है।

पहला– काव्य-मर्म की समझ विकसित करने के लिए।

दूसरा– रचना-कर्म में संलग्न होने वाले व्यक्ति को काव्य के रचनागत अनिवार्य तत्वों की शिक्षा देने के लिए।

संस्कृत में लिखा गया काव्यशास्त्र आचार्यों द्वारा लिखा गया है, अर्थात् वे इस विद्या के अधिकारी विद्वान थे, किन्तु हिंदी में काव्यशास्त्र का प्रणयन कवियों द्वारा किया गया है अर्थात् ये काव्य रचना भी करते थे और काव्यशास्त्र भी इन्होंने निर्मित किया। दो नावों की सवारी ने इनके काव्यशास्त्र को प्रायः हल्का कर दिया है।

2.2 रीतिकाल से पूर्व हिंदी में काव्यशास्त्रीय चिंतन

रीतिकाल से पूर्व भक्तिकाल और आदिकाल में संस्कृत काव्यशास्त्र की परंपरा विरासत में विद्यमान थी परन्तु इस काल के कवियों ने न तो इस दिशा में कोई प्रयास किया न इसकी उन्हें कोई आवश्यकता थी, क्योंकि आदिकाल में युद्ध का वातावरण था और भक्तिकाल में अध्यात्म का।

युद्ध और अध्यात्म में कलात्मक सौन्दर्य का कोई अवकाश नहीं था, मात्र अनुभव और भाव का सौन्दर्य ही केन्द्र में रहा।

कृपाराम की 'हिततरंगिणी' से रीति निरूपण की परंपरा का आरम्भ माना जाता है। वैष्णव भक्त रूपगोस्वामी ने 'भक्तिरसामृतसिन्धु' जैसे काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ की रचना की जिसमें माधुर्य भक्ति के अंगरूप श्रृंगार रस और नायक-नायिका भेद है। उसके विभिन्न संदर्भों की व्याख्या करने वाला 'उज्जवलनीमणि' शीर्षक ग्रन्थ की रचना भी की। कृपाराम, सूरदास, नन्ददास आदि ने आगे चलकर ब्रजभाषा में इस विषय को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। तदुपरान्त अन्य काव्यांगों की ओर भी लोगों का ध्यान गया और भक्ति का माध्यम मानी जाने वाली कविता के रूप-विधान सम्बन्धी तत्वों की चर्चा की जाने लगी।

भक्तिकाल के अन्तिम सोपान में कविता ने राजदरबारों में प्रवेश किया और उसे कला के रूप में सम्मान प्राप्त होने लगा। अब कवियों ने अपने अप्रियदाताओं को प्रसन्न करने के लिए उनकी प्रशस्ति और दरबार में अनेक प्रतियोगी कवियों के मध्य अपनी रचना को सम्मान दिलाने हेतु वाणी का सौन्दर्य बढ़ाने वाले तत्वों का अनिवार्यतः प्रयोग तथा अन्य कवियों की कविता के गुण-दोष की चर्चा प्रारंभ की। जिससे वे अपनी रचना को पुरस्कृत करवा सकें। तात्पर्य यह कि भक्तिकाल में काव्यांग निरूपण की प्रवृत्ति भक्ति की सहयोगिनी के रूप में रही किन्तु दरबार में प्रवेश करते ही वह भक्ति का अवलम्ब छोड़ स्वतन्त्र रूप में विराजमान हो गयी।

BHDC-106.indd 21 19-03-2021 08:51:33

सन् 1541 में कृपाराम ने 'हिततरंगिणी' नामक ग्रन्थ की रचना की जो 400 छन्दों से युक्त है, पाँच तंरगों में विभाजित है जिनमें क्रमशः नायक-नायिका भेद, सखी कर्म, दूती के भेद व उसके कर्म, स्वीकाया नायिका के भेद, परकीया-सामान्या के भेद, मान के आधार पर नायिकाओं के भेद का वर्णन है। दोहा, छन्द का प्रयोग लक्षण उदाहरण के लिए किया गया है।

2.2.1 सूरदास

सगुण भक्ति में कृष्णभक्ति शाखा के अत्यन्त महत्वपूर्ण कवि हैं, सूरदास। 'सूरसागर' एवं 'सूरसारावली' के अतिरिक्त इनकी एक रचना है– 'साहित्य लहरी', इसे कुछ विद्वान अप्रमाणिक मानते हैं परन्तु परंपरा इसे सूरदास की रचना स्वीकार करती हैं। सूरदास की यही रचना काव्यांग-विवेचन सम्बंधी है।

सूरदास ने कृपाराम की भाँति लक्षण-ग्रन्थ की रचना नहीं की है, अपितु सीधे लक्ष्य पदों की रचना करके यह सिद्ध कर दिया कि भक्तिकाल में भी रीतिबद्ध रचना की गयी। यद्यपि सूरसागर के भी कई पद भी नायिका भेद और श्रृंगार रस की सामग्री के शास्त्रीय ढंग पर लिखे गये हैं। 'साहित्य लहरी' में भी श्रृंगार रस के अतिरिक्त विविध अलंकारों के उदाहरण-रूप में अनेक पद देखे जा सकते हैं। पद की अन्तिम पंक्ति में अलंकारों के नाम का निर्देश करने की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है। अप्पय दीक्षित के कुवलयानन्द का प्रभाव साहित्य लहरी पर दिखायी देता है। दृष्टि कूट-पदों के उदाहरण भी इस ग्रन्थ में दिखायी देते हैं। भाषा की दृष्टि से संस्कृत की तत्सम शब्दावली का प्रयोग है, किन्तु ब्रजभाषा का सहज माधुर्य भी है।

कृष्ण भक्त कवियों में नंददास प्रसिद्ध हैं पर रीति-निरूपण की परंपरा को इन्होंने आगे बढ़ाया है। इस संदर्भ में इनकी रचना 'रसमंजरी' है। इसमें नायक, नायिका, हाव, हेला, रतिभाव आदि का भेदों' के साथ विस्तार से वर्णन किया गया है। दोहा चौपाई शैली में नन्ददास ने स्वीकाया, परकीया, हाव-भाव तथा नायक के भेदों को विशेष रूप से समझाया है तथा नायिकाओं के गुण, चेष्टा एवं स्वभाव को सुबोध व सहज रूप में सम्प्रेषित किया है।

भक्तिकाल के रीति-निरूपण करने वाले कवियों में केशवदास प्रमुख हैं। रसिकप्रिया, कविप्रिया एवं छन्दभाषा इनके काव्यांग निरूपक ग्रन्थ है। 'रसिकप्रिया' में 16 प्रकाश हैं– 13 में नायक-नायिका भेद, श्रृंगार रस, कामदशा, मानमोचन, विप्रलम्भ तथा दूती के भेद व उसके कर्म का वर्णन है। 'छन्दमाला' दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में 77 वर्ण वृत्तों तथा द्वितीय में 26 मात्रावृत्तों के लक्षण उदाहरण सहित दिये गये हैं।

2.2.2 रहीम

'नगर शोभा' और 'बरवै नायिका भेद' ये दो ग्रन्थ रहीम के रीति-निरूपक हैं। 'नगर शोभा' दोहा छन्द में लिखा गया है। कुल 142 दोहे इसमें है जिनमें रंगरेजिन, वनजारिन, तुरकिन, तेलिन, गूजरी, कैथिन जौहरिन, बारिन, भाटियारिन आदि विभिन्न जाति व व्यवसाय वाली स्त्रियों के सौन्दर्य वर्णन व शील स्वभाव का संकेतात्मक परिचय दिया गया है। सामन्ती वातावरण में रहने के कारण कवि की दृष्टि नारी सौन्दर्य पर विशेष रूप से रही होगी और 'नगर शोभा' के रूप में स्त्रियों के सौन्दर्य का वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है। 'बरवै नायिका भेद' बरवै छन्द में नायिका भेद का वर्णन करने वाला ग्रन्थ है। शास्त्रोक्त नायिकाओं की चर्चा करते हुए रहीम उत्तमा, मध्यमा, स्वकीया, मुग्धा, नवोढ़ा, परकीया आदि के भेदों को प्रस्तुत करते हैं। इसमें

मौलिकता तो नहीं, किन्तु सरलता एवं सम्प्रेषणीयता प्रशंसनीय है। अवधी मिश्रित ब्रजभाषा इसको रीति-निरूपक ग्रन्थों में श्रेष्ठ बनाती है। नीति एवं भक्ति के दोहे भी रहीम के लोकख्यात हैं।

सुन्दर कविषय ने 'सुन्दर श्रृंगार' शीर्षक ग्रन्थ में नायक-नायिका भेद व श्रृंगार रस का वर्णन किया है और श्रृंगार को 'रसराज' माना है। नायक भेद, नर्म सचिव, दूती भेद, सखी कर्म, दर्शन भेद, संयोग व विप्रलंभ श्रृंगार व दश कामदशाओं आदि का मनोहर वर्णन सुन्दर कविषय ने अपने ग्रन्थ में किया है। मौलिकता की दृष्टि से कोई उल्लेखनीय तत्व नहीं है किन्तु सम्प्रेषणीय सहज लक्षण एवं तदनुरूप उदाहरणों ने इस ग्रंथ को विशेष बना दिया है।

न्यामत खाँ जान प्रेममार्गी रचना करने के कारण प्रसिद्ध है। रीति व काव्यांग निरूपण सम्बंधी इनके चार ग्रन्थ हैं– 1) रसकोश 2) कवि वल्लभ 3) सिंगार तिलक, और 4) रस मंजरी। 'रसकोश' में नवरस वर्णन व नायक-नायिका भेद है। 'कविवल्लभ में गुण, दोष, अलंकार व छन्द का वर्णन है। अन्तिम दो रुद्रभट के श्रृंगार तिलक और भानुदत्त की रसमंजरी के अनुवाद हैं। न्यामत खाँ जान ने लक्षण-निरूपण के लिए संस्कृत-ग्रंथों को आधार बनाया है। भाषा के प्रसंग में व्यास और समास नामक परंपरा-प्रचलित दो भेदों का सुन्दर विवेचन किया है।

वलभद्र, मोहनलाल मिश्र व मुबारक आदि का भी इस क्षेत्र में प्रशंसनीय योगदान है।

2.3 रीतिकाल में काव्यशास्त्र का विकास

रीतिकाल का समय संवत् 1700 से संवत् 1900 तक माना गया है। मिश्रबन्धुओं ने इसे 'अलंकृत काल' आचार्य शुक्ल ने 'रीतिकाल' और पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'श्रृंगार काल' कहा है। इन नामकरणों का आधार यह है कि इस काल की रचनाओं में श्रृंगारिकता, रीति निरूपण व अलंकरण की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है। रीतिकाल से पूर्व कृपाराम, सूरदास, नन्ददास, रहीम आदि को इस प्रवृत्ति की पूर्व कड़ी के रूप में देखा जा सकता है, जिनका उद्देश्य मौलिकता नहीं, अपितु सहज, सुबोध भाषा में काव्यांगों का विवेचन रहा है। रीतिकालीन कवियों ने यही राह चुनी। इन्होंने भी अपना आदर्श– भानुदत्त की रसमंजरी, अव्वय दीक्षित का 'कुवलयानंद' मम्मट का 'काव्यप्रकाश' भट्ट केदार का 'वृत्तरत्नाकर' गंगादास की छन्दोमंदारी, प्राकृतपैंगलम तथा केशव दास की कविप्रिया को बनाया।

रीतिकाल के दरबारी कवियों व जनकवियों ने भी आत्म-प्रदर्शन हेतु व काव्य-रसिकों को काव्यांगों का सहज व समुचित ज्ञान कराने हेतु अपने रीति-निरूपक ग्रन्थों की रचना ब्रजभाषा में कीं। अपने अप्रियदाताओं को प्रसन्न करने के लिए उनकी रुचि के अनुरूप श्रृंगारिक रचनाएँ कीं। इसी कारण रीति-निरूपण व श्रृंगारिकता इनकी रचनाओं की प्रमुख प्रवृत्ति रही है।

2.3.1 सर्वांग निरूपण : प्रमुख आचार्य एवं अवदान

सर्वांग निरूपण के अन्तर्गत काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य-भेद, शब्द-शक्ति, काव्यात्मा, काव्य-गुण, काव्य-दोष, अलंकार एवं छन्द-निरूपण आदि का विवेचन किया जाता है। इस दृष्टि से चिन्तामणि, देव, कुलपति, दास, सोमनाथ, अमीरदास, याकूब खाँ, राय शिवप्रसाद आदि का नाम लिया जा सकता है।

BHDC-106.indd 23 19-03-2021 08:51:33

चिन्तामणि

इनके नौ ग्रंथ है– रस विलास, छन्द विचार– पिंगल, श्रृंगार मंजरी, कवि कुल कल्पतरु, कृष्ण चरित, काव्य विवेक, काव्य प्रकाश, कवित्त विचार, और रामायण।

'रसविलास' में रसों का सम्पूर्ण विवेचन है। 'श्रृंगार मंजरी' में नायक, नायिका भेद वर्णित है। 'कवि कुल कल्पतरु में काव्य के दस अंगों का सुबोध व सहज भाषा में वर्णन है। 'छन्दविचार पिंगल' में छन्दों का सविस्तार विवेचन है।

रीति-निरूपण का कार्य चिन्तामणि ने विशेष गम्भीरता के साथ किया है। लक्षण देते समय तत्सम्बंधित समस्त ग्रन्थों को ये देखते हैं। उपयुक्त का ग्रहण करते हैं और आवश्यकता के अनुसार उसमें परिवर्तन भी करते हैं। मौलिक योगदान न कर पाने के बावजूद स्पष्ट विचार व सम्प्रेष्य भाषा के कारण मतिराम की रचनाएँ ग्राह्य एवं प्रशंसनीय हैं। रसवादी आचार्य होने के कारण सभी रसों का सुन्दर विवेचन मिलता है तथा अलंकारों का प्रयोग रसोत्कर्ष हेतु ही किया गया है। छन्दों का विवेचन भी प्रशंसनीय है।

कुलपति मिश्र

रस रहस्य, संग्राम सार, दुर्गाभक्ति चंद्रिका, मुक्ति तरंगिणी तथा नखशिख ये पाँच ग्रन्थ कुलपति मिश्र के हैं। इनमें प्रथम तीन ही उपलब्ध है। 'रस रहस्य' ग्रन्थ काव्यांग विवेचन का श्रेष्ठ ग्रन्थ है। इसमें आठ वृत्तान्त हैं जिनमें क्रम से काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु काव्यपुरुष-रूपक, काव्यभेद, शब्द शक्ति, ध्वनि, गुणीभूतव्यंग्य, गुण दोष, शब्दालंकार तथा अर्थालंकार का सुन्दर विवेचन किया गया है। इस तरह छन्द व नायक-नायिका भेद के अतिरिक्त कोई रीति-निरूपक तत्व कुलपति मिश्र से छूटा नहीं है। निरूपित विषयों के लिए इन्होंने तत्सम्बंधित संस्कृत ग्रन्थों का अनुशीलन करने के उपरान्त अपना निर्णय दिया है, जिसमें कहीं पूर्वाचार्यों से सहमति तो कहीं नवीनता है। लक्षणों व उदाहरणों को स्पष्ट करने के लिए कहीं-कहीं ब्रजभाषा-गद्य का प्रयोग भी किया गया है।

कुमार मणि

इनके दो ग्रन्थ है रसिक रंजन और रसिक रसाल। 'रसिक रंजन' में संस्कृत के कवियों की सूक्तियों का संग्रह किया गया है। 'रसिक रसाल' में काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, काव्य-भेद, शब्द-शक्ति, ध्वनि, रस, नायिका भेद, गुणीभूत व्यंग्य, शब्दालंकार, अर्थालंकार, काव्य गुण एवं काव्य दोष का विवेचन है। बड़ी ही स्पष्ट एवं सीधी भाषा में विभिन्न विषयों का गम्भीरता पूर्वक निरूपण किया गया है। संस्कृत आचार्यों से प्रभावित होने के बावजूद कुमारमणि उनका अन्धानुकरण नहीं करते। भाषा-कौशल व उसकी सहज सम्प्रेषणीयता के कारण ये रीतिकाल के ख्याति प्राप्त कवियों में हैं।

देव

ये रीतिकाल के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कवि हैं। इनके 72 ग्रन्थ बताए जाते हैं, किन्तु वर्तमान समय में 15 ही उपलब्ध हैं– भाव विलास, अष्टयाम, भवानी विलास, प्रेम तरंग, कुशल विलास, जाति विलास, देव चरित्र, रसविलास, प्रेमचन्द्रिका, सुजान विनोद, काव्य रसायन, सुखसागर तरंग, रागरत्नाकर, देव शतक और देवमाया प्रपंच। प्रेम चन्द्रिका, राग रत्नाकर, देव शतक, देवचरित्र और देवमाया प्रपंच इन पाँच को छोड़कर

सभी काव्यांग विवेचन करने वाले ग्रन्थ हैं। 'भावविलास' में रस सामग्री, रसभेद, नायक-नायिका भेद तथा 39 अलंकारों का वर्णन है। 'काव्य रसायन' में काव्य स्वरूप, शब्द शक्ति, नव रस, नायक-नायिका भेद, गुण, वृत्ति, अलंकार व पिंगल विवेचन है। शेष ग्रन्थों में नायक-नायिका भेद और श्रृंगार रस का सविस्तार वर्णन है। 'अष्टयाम' में दिन के आठों प्रहरों में नायक-नायिका के विलास का वर्णन है। लक्षणों की स्पष्टता, संक्षिप्तता, उदाहरणों की तदनुरूपता एवं आत्मविश्वास देव को विशिष्ट व प्रशंसनीय बनाते हैं। कुछ स्थलों की मौलिकता के साथ कहीं-कहीं अस्पष्टता इनको साधारण पाठक के लिए अनुपयोगी एवं गम्भीर पाठक के लिए अनाकर्षक भी कर देती है।

सोमनाथ

इनके पाँच ग्रन्थ बताए जाते हैं– श्रृंगार विलास, रसपीयूष निधि, कृष्ण लीलावती–पंचाध्यायी, सुजान विलास और माधव विनोद। इनमें कृष्ण लीलावती और सुजान विलास को छोड़कर शेष उपलब्ध हैं। 'श्रृंगार विलास' में श्रृंगार रस तथा नायक-नायिका भेद का वर्णन है। 'रसपीयूषनिधि' में अपने पाठकों को काव्यशास्त्र में दीक्षित करने का स्पष्ट उद्देश्य है। इसी कारण इस रचना में सहज व बोधगम्य विषयों का ही चयन किया गया है। अपने पूर्ववर्ती आचार्यों से प्रभावित होकर सोमनाथ ने छन्द, काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, काव्य शरीर की सामग्री व भेद, शब्द शक्ति, ध्वनि, गुणीभूत व्यंग्य, दोष गुण शब्दालंकार, अर्थालंकार तथा नायक-नायिका भेद का सविस्तार मनोहर वर्णन किया है। जिस ध्वनि रसवाद का विवेचन उन्होंने किया है, उसका सम्यक् निर्वाह भी किया है। इनकी भाषा व्याकरण सम्मत एवं विषयानुकूल है।

भिखारीदास

भिखारीदास का नाम सर्वांग विवेचक आचार्यों में महत्वपूर्ण हैं। रस सारांश, काव्य निर्णय, श्रृंगार निर्णय, छन्दोर्णवपिंगल, शब्दनाम कोश, विष्णु पुराण भाषा, और शतरंजशति का शीर्षक सात ग्रन्थ इनके द्वारा रचित हैं। 'रस सारांश' और 'श्रृंगार निर्णय' में रस-सामग्री इसके भेद तथा नायक-नायिका भेद का सुन्दर वर्णन है। 'काव्य निर्णय' में काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, काव्य पुरुष स्वरूप, भाषा, गुण, शब्द शक्ति, रस सामग्री, गुणीभूत व्यंग्य, अलंकार गुण, शब्दालंकार, चित्रालंकार, दोष आदि का सम्यक् विवेचन है। 'छन्दोर्णवपिंगल' में छन्द निरूपण किया गया है।

भिखारीदास में आलोचक दृष्टि एवं मौलिक चिन्तन दिखायी देता है। संस्कृत आचार्यों द्वारा रचित काव्यशास्त्र के आलोक में अपने पूर्ववर्ती हिंदी-काव्य का अध्ययन कर उसमें उपयुक्त उदाहणों का चयन कर भिखारीदास ने आधुनिक हिंदी आलोचना का प्रारम्भ किया काव्य प्रयोजन, अर्थालंकार, मूल अलंकार, गुण नायिका भेद तथा श्रृंगार रस के नवीन भेद आदि प्रसंगों में इनकी यह विशेषता दिखायी देती है। नवीन छन्दों के निर्माण में इनकी दृष्टि की व्यापकता निहित है। भाषा परिमार्जित एवं तत्सम, तद्भव के साथ अरबी फारसी के शब्दों का निस्संकोच भाव से प्रयोग किया गया है।

रसिक गोविन्द

रामायण सूचनिका, कलि जुग रासा, अष्ट देश भाषा, समय प्रबन्ध, युगल रस माधुरी, पदावली, रसिक गोविन्दानन्दघन, पिंगल, लछिमन, चन्द्रिका और रसिक गोविन्द ये दस रचनाएँ रसिक गोविन्द द्वारा रचित हैं। इनमें प्रारम्भिक आठ उपलब्ध हैं। उपलब्ध ग्रन्थों में भी पिंगल और रसिक गोविन्दानन्दघन ही रीतिग्रन्थ हैं। 'रसिक गोविन्दानन्दघन' चार प्रबन्धों में विभक्त विशालकाय ग्रन्थ है। प्रथम के अन्तर्गत रस

BHDC-106.indd 25 19-03-2021 08:51:33

लक्षण, रस भेद तथा प्रत्येक रस के विभाव, अनुभाव, सात्विक, संचारी और स्थायी भाव के लक्षण एवं उदाहरण हैं। द्वितीय में नायक-नायिका भेद, नायक सरवा, दूती और उसके कर्मों का वर्णन है। तृतीय में दोष लक्षण दोष भेद तथा दोष समाधान का विस्तृत विवेचन है। चतुर्थ में गुण, वृत्ति, पाँच शब्दालंकारों तथा 123 अर्थालंकारों का वर्णन है। 'बीच-बीच में काव्य लक्षण काव्य भेद, शब्दशक्ति आदि की भी चर्चा है। पूर्ववर्ती आचार्यों के ग्रन्थों, लक्षणों तथा उदाहरणों का भी उपयोग किया गया है। मौलिकता न होने के बावजूद आचार्य कर्म का गम्भीरता के साथ निर्वाह किया गया है।

प्रताप साहि

कवि, टीकाकार एवं रीतिकार के रूप में प्रसिद्ध प्रताप साहि के आठ ग्रन्थ हैं– जयसिंह प्रकाश, श्रृंगार मंजरी, व्यंग्यार्थ कौमुदी, श्रृंगार शिरोमणि, अलंकार चिन्तामणि, काव्य विनोद, जुगल नखशिख और रसचन्द्रिका। इन्होंने भाषा भूषण, रसराज, नरवशिरव और बिहारी सतसई की टीकाएँ भी लिखी। टीकाओं से इतर ग्रन्थों में 'व्यंग्यार्थ कौमुदी' एवं 'काव्य विनोद' ही उपलब्ध है। 'व्यंग्यार्थ कौमुदी' में शब्द शक्ति, अलंकार तथा व्यंग्यार्थ महत्व के अतिरिक्त नायक नायिका, शब्द शक्ति एवं अलंकार विशेष का विवेचन है। 'काव्य विनोद' में काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, काव्य भेद, शब्द शक्ति, ध्वनि, गुण, दोष, गुणी भूत व्यंग्य का वर्णन है। प्रताप साहि की काव्यशास्त्र में अत्यधिक रुचि थी। विश्वनाथ एवं पंडितराज जैसे विद्वानों को उद्धृत कर इन्होंने अपने विवेचन को प्रामाणिक बनाने का प्रयास किया है परन्तु भ्रम के कारण कहीं-कहीं उचित लक्षण नहीं दे पाये हैं। नायक-नायिका भेद स्पष्ट है, किन्तु मौलिकता का अभाव है।

अमीर दास

सभामंडन, वृत्तचन्द्रोदय, ब्रजविलास सतसई, श्री कृष्ण साहित्य सिन्धु, शेरसिंह प्रकाश, फागपचीसी, ग्रीष्मविलास, भागवतरला कर, दूषण उल्लास, अमीर प्रकाश, वैद्यकल्पतरु एवं अश्वसंहिता प्रकाश ये बारह रचनाएँ अमीर दास की हैं। इनमें प्रथम पाँच और अन्तिम दो ही वर्तमान में उपलब्ध है। 'ब्रजविलास सतसई' में श्रृंगार रस के विभिन्न अंगों का विवेचन है। 'सभामंडन' में पाँच उल्लासों में क्रमशः काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, काव्य लक्षण, काव्य भेद, शब्दार्थ वृत्ति, ध्वनि-भाव, रस, गुण, काव्यदोष, नायक नायिका भेद तथा अलंकारों का विवेचन है। वृत्तचन्द्रोदय में लघु गुरु गण आदि का सामान्य परिचय तथा 40 मात्रिक छन्दों और 61 वर्णिक छन्दों का विवेचन है। श्री कृष्ण साहित्य सिन्धु में पाँच तरंगों में काव्य लक्षण, काव्य भेद, शब्द शक्ति, ध्वनि भेद, रस और रस सामग्री, गुण नायक-नायिका भेद, दोष एवं अलंकार वर्णन है। 'शेरसिंह प्रकाश' में पाँच शब्दालकारों, और सत्तर अर्थालंकारों का विवेचन है। अमीर दास ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के मतों पर विमर्श करते हुए और 'ननु' शैली में शंका उठाते हुए उनके समाधान जिस प्रकार प्रस्तुत किए हैं, वे अत्यन्त स्पष्ट एवं बोधगम्य हैं।

ग्वाल

रीतिकाल के सर्वांग निरूपक आचार्य ग्वाल के द्वारा रचित सोलह ग्रन्थ हैं – रसिकानन्द, कवि दर्पण, बलवीर विनोद, साहित्यानन्द, प्रस्तार प्रकाश, नेहनिर्वाह, बंसीबीसा, हम्मीर हठ, विजय विनोद, भक्तभावन, कुब्जाष्टक, गुरु पचासा, कवि हृदय विनोद, निम्बार्कस्वाम्याष्टक, इश्क लहर दरियाव हैं। इनमें प्रथम छः लक्षणग्रन्थ हैं, शेष

लक्ष्य ग्रन्थ एवं अनुवाद है। लक्षण ग्रन्थों में 'रसिकानन्द', 'बलवीर विनोद' और 'नेह निर्वाह' नायक-नायिका भेद और रस विवेचन सम्बंधी हैं तथा 'कवि दर्पण', 'प्रस्तार' 'प्रकाश' और 'साहित्यानन्द' काव्य दोष, छन्द एवं स्वांग निरूपक ग्रन्थ हैं। ग्वाल के सभी ग्रन्थों में विवेचन की प्रौढ़ता है, परन्तु विषय की व्यापकता की दृष्टि से साहित्यानन्द श्रेष्ठ हैं। इस ग्रन्थ का शास्त्रीय आधार भी व्यापक है। इसमें भाव, रस, छन्द, शब्द शक्ति, काव्य लक्षण, काव्य भेद, काव्य स्वरूप, काव्य हेतु काव्य प्रयोजन, ध्वनि, गुणीभूत व्यंग्य, चित्रकाव्य, गुण-दोष', रीति और अलंकार का सविस्तार विवेचन है। ग्वाल में अपने पूर्ववर्तियों की आलोचना करने का साहस एवं प्रतिभा दोनों है। इनकी शैली समन्वयात्मक है।

2.3.2 रस-निरूपण : प्रमुख आचार्य एवं अवदान

- **सर्वरस निरूपण**

  सर्वरस निरूपण करने वाले आचार्य एवं कवि ही इस युग की साहित्यिक प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। समस्त रसों का विवेचन करने वाले सभी कवियों ने श्रृंगार के रसराजत्व एवं नायक-नायिका भेद का भी विवेचन किया है।

तोष

संस्कृत के आचार्यों का आश्रय लेने के बावजूद तोष ने स्वयं के तरीके से रसों का विस्तृत एवं सुबोध विवेचन किया है। सुधानिधि, नखशिख एवं विनयशतक ये तीन ग्रन्थ इनके हैं। अब मात्र 'सुधानिधि' ही उपलब्ध है। इसमें नवो रसों का विभाव, अनुभाव एवं स्थायी भावों के साथ विवेचन है। श्रृंगार रस विवेचन में आलम्बन विभाव का वर्णन करते हुए नायक-नायिका के भेदों, नायक, सरवा एवं दर्शन के भेदों का तथा उद्दीपन विभाव के अन्तर्गत वर्ण एवं व्यवसाय के आधार पर अनेक प्रकार की सखियों, दूतियों एवं अन्य प्रकार के उद्दीपक पदार्थों का वर्णन किया गया है। श्रृंगार रस का विस्तृत विवेचन है। सखी एवं संचारी के प्रसंग में तोष ने मौलिक कल्पनाएँ की हैं। इनकी मौलिकता के कारण पूर्ववर्ती आचार्यों में किसका कहाँ प्रभाव है, इसका पता लगाना कठिन है।

रसलीन

इनका पूरा नाम सैयद गुलाम नबी रसलीन था। रसप्रबोध एवं अंगदर्पण ये दो रचनाएँ इनकी है। 'रसप्रबोध' में रस विवेचन एवं अंगदर्पण में नखशिख वर्णन किया गया है। 'रसप्रबोध' में यद्यपि समस्त रसों का विवेचन है किन्तु मुख्य रूप से श्रृंगार रस एवं इनके आश्रय नायक और नायिका भेद का विस्तृत वर्णन है। रसों का सामान्य परिचय देने में रस और कारण को स्पष्ट करने के लिए विभाव, अनुभाव एवं स्थायी भाव का वर्णन किया गया है। सात्विक एवं तैंतीस संचारियों को क्रमशः तन और मन के रूप में विभाजित करते हुए नवों रसों एवं उनके स्थायी भावों का उल्लेख किया गया है। श्रृंगार रस विवेचन में आलम्बन की चर्चा करते हुए नायक-नायिका के लक्षण, भेद एवं उद्दीपन की चर्चा करते हुए सखी, दूती, नायक– सखा, भेद, कर्म एवं षड्ऋतुओं का वर्णन किया गया है। बारहमासा के अन्तर्गत विप्रलंभ श्रृंगार का विवेचन है। लक्षण एवं उदाहरण दोनों के लिए रसलीन ने दोहा छन्द का प्रयोग किया है। स्पष्टता, क्रमव्यवस्था एवं विस्तार में इनकी मौलिकता के भी दर्शन होते हैं।

BHDC-106.indd 27 19-03-2021 08:51:33

पद्माकर

हिम्मत बहादुर विरुदावली, पदमाभरण, जगद्विनोद, प्रबोध पचासा, गंगालहरी, प्रतापसिंह विरुदावली और कविपच्चीसी इन सात ग्रन्थों के रचयिता पदमाकर ने कुछ स्फुट छन्द भी रचे थे। इनके ग्रंथों में 'पदमाभरण' एवं 'जगद्विनोद' ही रीतिग्रन्थ है जिनमें क्रमशः अलंकार एवं रसों का वर्णन मिलता है। 'जगद्विनोद' में 6 प्रकरण एवं 731 छन्द हैं। रसवर्णन में आलम्बन के अन्तर्गत नायक-नायिका भेद, चार प्रकार के दर्शन, उद्दीपन के अन्तर्गत सखा-सखी दूती एवं षड्ऋतुओं का वर्णन है। अनुभाव-विवेचन में 8 सात्विक भावों एवं 12 हावों का वर्णन करते हुए नवरसों का विवेचन किया गया है। नवरसों का सफल वर्णन करने वाले हैं, पदमाकर। लक्षणों की सरलता, स्पष्टता एवं उदाहरणों की सरसता ही इनकी विशेषता है। ब्रजभाषा गद्य का प्रयोग भी इनकी रचनाओं में है। संस्कृत आचार्यों की शास्त्रीयता एवं सूक्ष्मता का इनमें अभाव है।

बेनी 'प्रवीन'

नवरसों का संक्षिप्त लक्षण एवं सरस उदाहरण देने वाले बेनी 'प्रवीन' की तीन रचनाएँ हैं – श्रृंगार भूषण, नवसतरंग और नानारावप्रकाश। इनमें 'नवसतरंग' ही उपलब्ध है। इस ग्रंथ में 543 छन्द है। इसमें नवों रसों का वर्णन, लक्षण एवं स्थायी भावों के साथ किया गया है। श्रृंगार रस वर्णन में आलम्बन विभाव के अन्तर्गत नायक-नायिका भेद, चारों प्रकार के दर्शन उद्दीपन विभाव के अन्तर्गत सखी, दूती एवं अन्य उद्दीपन सामग्री, सात्विक, संचारी, भावोदय, भावाभास का वर्णन एवं अन्य रसों का विस्तृत विवेचन है। लक्षण के लिए दोहा, सोरठा एवं बरवै तथा उदाहरण के लिए, कवित्त सवैया, एवं दोहा छन्द का प्रयोग किया गया है। बेनी प्रवीन के लक्षण संक्षिप्त एवं बोधगम्य तथा उदाहरण लक्षणों के अनुरूप एवं सरस हैं।

कृष्ण भट्टदेव ऋषि

श्रृंगार रस को प्रधान मानकर उसका विस्तार के साथ वर्णन कृष्ण भट्टदेव ने किया है। इनके यहाँ अन्य रसों का अन्तर्भाव श्रृंगार रस में भी दिखाया गया है। इनका एकमात्र ग्रन्थ ' श्रृंगार रस माधुरी' है। यह सोलह अध्यायों में विभक्त है। इनमें क्रमशः द्विविध श्रृंगार, नायक-नायिका भेद, चार प्रकार के दर्शन, दूती और मिलन भेद आदि का वर्णन है। व्यवस्थापरक विवेचन, लक्षणों की स्पष्टता तथा उदाहरणों की सरसता कृष्ण भट्टदेव की विशेषता है।

मतिराम

इन्होंने श्रृंगार रस को सर्वश्रेष्ठ माना है। इनके आठ ग्रन्थ– फूल मंजरी, लक्षण श्रृंगार, साहित्य सार, रसराज, ललित ललाम, सतसई, अलंकार पंचाशिका और वृत्त कौमुदी हैं। 'रसराज' में श्रृंगार रस और इसके आलम्बन रूप नायक और नायिका भेद का विवेचन किया गया है। दोहा, कवित्त सवैया छन्दों का प्रयोग करते हुए रचनाकार ने इस प्रसंग में चित्रदर्शन, स्वप्नदर्शन, उद्दीपन, अनुभाव व हावभाव आदि का वर्णन किया है।

सुखदेव मिश्र, याकूब खाँ उजियो, रामसिंह और चन्द्रशेखर बाजपेयी आदि भी सर्वरस विवेचक आचार्य कवियों में महत्वपूर्ण हैं। इनमें अधिक ने राजप्रशस्ति भी की है और सर्वरस निरूपक ग्रन्थ भी लिखे हैं।

BHDC-106.indd 28 19-03-2021 08:51:33

- **नायक-नायिका भेद**

  रीतिकाल में रस-विवेचन करने वाले सभी आचार्यों ने शृंगार-रस-प्रकरण में आलम्बन रूप में नायक-नायिका भेद का विशद वर्णन किया है किन्तु इसमें कुछ नवीनता लाने वाले आचार्यों का वर्णन निम्नलिखित है।

कालिदास त्रिवेदी

इन्होंने हजारा, राधा माधव बुधमिलन विनोद की है। इनमें वर वधू विनोद नायिका भेद का विवेचन करने वाला ग्रन्थ है। यह पाँच प्रभावों में विभाजित है। प्रथम प्रभाव के अन्तर्गत मंगलाचरण, आश्रयदाता की प्रशस्ति, वंश परिचय तदुपरान्त एक कथा-रूपक में विषय को प्रस्तुत किया गया है– कृष्ण से राधा का मिलन कराने के लिए ललिता दूती कर्म का निर्वाह करती है, कृष्ण के आने में विलम्ब देखकर राधा के मनोरंजन हेतु नायिका भेद का वर्णन करती है। अन्तिम प्रभाव में उत्तम आदि तीन प्रकार की नायिकाओं का उल्लेख कर जैसे ही सखी कर्म समाप्त करती है, वहॉ कृष्ण आ जाते हैं। यहीं पर रचनाकार राधा-कृष्ण की सुरत व सुरतान्त का वर्णन कर ग्रन्थ समाप्त करता है। मूल्यांकन की सभी कसौटियों पर ग्रन्थ सामान्य है, परन्तु सामग्री को कथा रसक में प्रस्तुत करने की आकर्षक मौलिकता हैं और छन्दों की नवीनता है। हरिगीतिका, छप्पय, त्रोटक, त्रिभंगी, चौपाई, कुंडलिया और भुजंगप्रयात जैसे छन्दों का कलात्मक सौन्दर्य के साथ प्रयोग किया गया है। कालिदास त्रिवेदी ने छन्द, भाषा एवं बिम्ब का अद्‌भुत संयोग रचा है।

2.3.3 अलंकार निरूपण : प्रमुख आचार्य एवं अवदान

रीतिकाल के कवि अलंकृति को प्रति विशेष रुचि रखने वाले थे, क्योंकि दरबारों में प्रतिद्वंद्विता वश प्रदर्शन प्रियता इनमें थी, दूसरे अपने पाठकों को ये अलंकार ज्ञान भी कराना चाहते थे अतएव इन सभी ने अलंकार निरूपण किया है। इनके विवेचन के केन्द्र में शब्दालंकार एवं अर्थालंकार दोनों रहे हैं किन्तु कुछ ने मात्र अर्थालंकारों का ही निरूपण किया है। अलंकार निरूपण करने वाले रीतिकालीन कवियों पर जयदेव के चन्द्रालोक तथा अप्पय दीक्षित के कुव्लयानन्द का प्रभाव दिखायी देता है।

जसवन्त सिंह

'भाषा भूषण' शीर्षक इनका अलंकार विवेचन करने वाला ग्रन्थ है। इसमें 212 दोहे हैं और यह पाँच प्रकाशों में विभक्त है। इनमें क्रमशः नायक-नायिका के भेद, हाव, अर्थालंकार, छेक, लाट, तीनों वृत्तियों के अनुसार अनुप्रास, यमक का वर्ण यमकानुप्रास' शीर्षक से किया है। इनके लक्षण व उदाहरण सरस एवं आकर्षक हैं।

मतिराम

ललित ललाम एवं अलंकारपंचाशिका ये दो ग्रन्थ मतिराम के अलंकार निरूपक ग्रन्थ हैं। 'अलंकार पंचाशिका' में आश्रयदाता की प्रशस्तिपरक स्फुट रचनाओं पर अलंकार के लक्षण आरोपित कर अलंकार ग्रन्थ का रूप दिये जाने के कारण यह सामान्य रचना है। 'ललित ललाम' में 100 अर्थालंकारों के भेद, उपभेद, लक्षण और उदाहरण दिये गये हैं। अपने पूर्ववर्ती आचार्यों से प्रभावित होने पर भी मतिराम ने उनका अन्धानुकरण नहीं किया है। रस से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न होने के कारण इन्होंने शब्दालंकारों की चर्चा नहीं की है। इनका विवेचन सुचिन्तित एवं तर्कसंगत है।

BHDC-106.indd 29 19-03-2021 08:51:33

भूषण

इनका 'शिवराज भूषण' शीर्षक ग्रन्थ अलंकार विषयक है। इसमें 105 अलंकारों की चर्चा है। 99 अर्थालंकार 4 शब्दालंकार और 2 चित्र और अलंकार वर्णित हैं। अर्थालंकारों में लगभग एक चौथाई लक्षणों की शब्दावली ललित ललाम से मिलती है। सारे उदाहरण शिवाजी के प्रशस्तिपरक हैं इसी कारण इनमें वे विशेषताएँ नहीं हैं जो एक अलंकार को दूसरे से अलग करती हैं।

पदमाकर

अलंकारों का वर्णन करने वाला इनका ग्रन्थ 'पदमाभरण' है। इसमें 100 अर्थालंकारों की चर्चा है जिसमें चार को छोड़कर शेष के लिए दोहे का प्रयोग किया गया है। छोड़े गये चार के लक्षण चौपाई और उदाहरण दोहा, चौपाई छन्द में है। चर्चा तो शब्दालंकार अर्थालंकार और उभयालंकार की है, किन्तु वर्णन के क्रम में शब्दालंकार नहीं है। पदमाकर की विवेचन शैली स्पष्ट और उदाहरण सरस हैं।

गोप, रसिक सुमति, रघुनाथ, दूलह, रसरूप, सेवादास, गिरिधरदास, बन्दीजन, आदि अन्य महत्वपूर्ण रचनाकार हैं, जिन्होंने अलंकार विवेचन में अपना योगदान दिया।

2.3.4 छंद निरूपण : प्रमुख आचार्य एवं अवदान

रीतिकाल में छंद निरूपण करने वाले कवियों की संख्या अल्प ही रही है परन्तु विषय-विवेचन की दृष्टि से ये सफल हैं। छंद ज्ञान से अपने पाठकों को परिचित कराने के लिए सरलता का इन्होंने विशेष ध्यान रखा है।

मुरलीधर भूषण

छन्द विषयक इनका ग्रन्थ तेरह प्रकरण वाला 'छन्दोहृदयप्रकाश' है। प्रकरण को इन्होंने 'उल्लास' की संज्ञा दी है। इन उल्लासों में क्रमशः वर्णिक मात्रिक गणों के स्वरूप उनके फलादि का परिचय, एक से छब्बीस अक्षरों तक के 200 समवर्णिक छन्दों का, 10 अर्द्धसमवर्णिक छन्दों का, 3 विषम वर्णिक छन्दों का निरूपण किया गया है। मात्रिक छन्दों के लगभग 200 भेदों का वर्णन है। इनमें 56 का लक्षण उदाहरण सहित निरूपण है। इनकी कोटि सम, अर्द्धसम और विषम तीनों प्रकार की है। छन्दों की विभिन्न जातियों का वर्णन है। अन्त में 'गद्य-विवरण' शीर्षक में पूर्णक, उत्कालिका प्रायः और वृत्तगन्ध नाम गद्य के तीन भेदों का भी विवेचन किया गया है। लक्षण और उदाहरण सरल एवं सुबोध हैं।

सुखदेव मिश्र

इनके दो ग्रन्थ वृत्तविचार और छन्दोविचार कहे जाते हैं किन्तु प्रथम ही उपलब्ध है। इसमें चार अध्याय हैं, जिनमें क्रमशः मंगलाचरण, कवि तथा आश्रयदाता परिचय, छन्द के सामान्य नियमों— दग्धाक्षर, गुरु, लघु, गण, प्रत्यय, आदि का स्वरूप, एक से छब्बीस अक्षरों के वर्णिक छन्दों का विवेचन आदि है। यह ग्रन्थ पाण्डित्यपूर्ण है, विवेचन शैली सरल है किन्तु अनेकरूपता के कारण बिखराव दिखायी देता है।

मतिराम

इनके छन्द विषयक दो ग्रन्थ हैं— छन्दसारसंग्रह और वृत्तकौमुदी। 'वृत्तकौमुदी' 5 प्रकाशों में विभाजित है। इनमें क्रमशः गण, वर्णिक छन्द, मात्रिक छन्द, प्रत्यय, और

BHDC-106.indd 30 19-03-2021 08:51:33

दण्डकों का वर्णन है। वर्णिक छन्दों में एक से छब्बीस अक्षरों वाले 147 छन्दों का वर्णन है। मात्रिक में एक से बत्तीस मात्राओं वाले 35 सममात्रिक और 20 अर्द्धसम, विषम और दण्डक हैं। मतिराम का विषय विवेचन शास्त्रीय, बोधगम्य और सहज है, इन्होंने यथास्थान मूलाधार ग्रन्थों का भी उल्लेख किया है।

राम सहाय

छन्द-विवेचन के ये रीतिकालीन श्रेष्ठ आचार्य हैं। इस विषय का इनका ग्रन्थ– वृत्ततरंगिणी' है। यह चार अध्यायों में विभक्त है जिसको राम सहाय ने 'तरंग' का नाम दिया है। इनमें क्रमशः लघु गुरु विषयक नियम, गण और उनके देवता, योग, फलादि कथन, प्रत्यय, एक से बत्तीस मात्राओं की विभिन्न जातियों के छन्दों का विवेचन, सम, अर्द्धसम और विषम इन तीन कोटियों में छन्दों का विवेचन, सममात्रिक छन्दों की संख्या, मात्रिक छन्दों का विवेचन, समवर्णिक छन्दों के साथ अर्द्धसम छन्दों तथा दण्डकों का वर्णन, तुकों का वैज्ञानिक विवेचन और उसके भेद का वर्णन है। विवेचन शैली की दृष्टि से यह उच्चकोटि का ग्रन्थ है। इसमें लक्षण दोहों के अतिरिक्त सूत्र पद्धति और कूट शैली में भी हैं। उदाहरण रचनाकार द्वारा स्वयंरचित हैं। उदाहरणों की सरसता आकर्षक है।

इस काल के अन्य छन्द-निरूपक आचार्यों में मारवन और दशरथ हैं। इन्होंने छन्दों का विवेचन करने वाले ग्रन्थ लिखे। मारवन का ग्रन्थ– 'श्रीनाथपिंगल' शीर्षक का है और दशरथ का 'वृत्तविचार'। इन दोनों में वर्णिक तथा मात्रिक छन्दों का भेदों सहित सुन्दर वर्णन लक्षण उदाहरण के साथ किया गया है।

2.4 सारांश

- रीतिकाल से पूर्व हिंदी में काव्यशास्त्रीय चिन्तन सूरदास से पहले कृपाराम की रचना 'हिततरंगिणी' में उपलब्ध होता है।
- सूरदास भक्त कवि हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण 'सूरसागर' है, किन्तु 'साहित्यलहरी' शीर्षक इनकी रचना काव्यशास्त्र का विवेचन करने वाली है। सूरसागर में लक्ष्य पदों के रूप में काव्यशास्त्रीय उदाहरण हैं।
- कृष्ण भक्त कवियों में नंददास की 'रसमंजरी' भी रीति-निरूपक श्रेष्ठ ग्रन्थ है।
- केशवदास की रसिकप्रिया, कविप्रिया एवं छन्दमाला।
- रहीम की नगर शोभा एवं बरवै नायिका भेद।
- रीतिकाल के अन्य नाम अलंकृत काल, शृंगारकाल हैं।
- सर्वांग निरूपण के अन्तर्गत चिन्तामणि, कुलपति मिश्र, कुमार मणि, देव, सोमनाथ, भिखारी दास, रसिक गोविन्द प्रताप साहि, अमीर दास, ग्वाल आदि प्रमुख रचनाकार हैं।
- रस-निरूपण के अन्तर्गत सर्वरस निरूपण करने वालों में तोष, रसलीन, पदमाकर, बेनी प्रवीन', कृष्ण भट्टदेव ऋषि और मतिराम आदि का नाम उल्लेखनीय है।

BHDC-106.indd 31 19-03-2021 08:51:33

- नायक-नायिका भेद का निरूपण करने वाले आचार्यों में कालिदास त्रिवेदी का नाम विशेष पद्धति से नायक-नायिका भेद की चर्चा करने के कारण प्रमुख है, वैसे रस विवेचन करने वाले सभी आचार्यों ने नायक-नायिका भेद का वर्णन श्रृंगार रस के संदर्भ में किया है।
- अलंकार-निरूपण करने वाले रीतिकालीन आचार्यों में जसवन्त सिंह, मतिराम, भूषण, पदमाकर आदि मुख्य हैं।
- छंद-निरूपण करने वाले आचार्यों में मुरलीधर भूषण, सुखदेव मिश्र, मतिराम, राम सहाय, मारवन और दशरथ आदि हैं।
- रीतिकालीन कवियों ने काव्यशास्त्रीय विवेचन संस्कृत के आचार्यों के अनुकरण पर किया है, इस कारण मौलिकता का अभाव है, दूसरे कवि एवं आचार्य दोनों कार्य की जिम्मेदारी उठाने के कारण व्यवस्था में व्यतिक्रम और लक्षणों एवं उदारहणों में त्रुटियाँ भी उपलब्ध होती हैं। तथापि शिक्षा देने के उद्देश्य में वे सफल हैं।

2.5 अवधारणात्मक शब्द

काव्यशास्त्र : काव्यशास्त्र काव्य के क्षेत्र में नियम व्यवस्था एवं शासन की शक्तियों का नियामक है। यह काव्य की कसौटी है। इस कसौटी के सिद्धान्त हैं– रस सिद्धान्त, अलंकार सिद्धान्त, रीति सिद्धान्त, ध्वनि सिद्धान्त, वक्रोक्ति सिद्धान्त तथा औचित्य सिद्धान्त।

काव्य पुरुष : भारतीय काव्यशास्त्रियों में सर्वप्रथम राजशेखर ने काव्य पुरुष का उल्लेख किया। आचार्य विश्वनाथ ने व्यवस्थित निर्णय देते हुए कहा– काव्य रूपी पुरुष के शरीर रूप में शब्दार्थ हैं, रसादि आत्मा है, शौर्यादि गुण हैं, काणत्वादि दोष हैं, रीति आदि उसके अवयव हैं और कटक-कुण्डल के समान सौन्दर्य प्रसारक आभूषण अलंकार हैं। अर्थात काव्य का एक पुरुष के शरीर, आत्मा, वस्त्र, अंग आभूषण से युक्त रूप के समान बताया गया है।

काव्य गुण : भरत ने गुणों की चर्चा करते हुए इनकी संख्या 10 बतायी। श्लेष, प्रसाद, समता, समाधि, माधुर्य, ओज, सुकुमारता, अर्थ, व्यक्ति, उदारता और कान्ति। वैसे मुख्यतः माधुर्य, प्रसाद और ओज इन तीन गुणों की ही मान्यता है।

छन्द : छन्द एक बंध है, जिसमें मात्राओं अथवा वर्णों में क्रम, गति और यति के नियम समाहित रहते हैं।

यति : जिस-जिस स्थान पर जिह्वा रुकती है, उसे यति कहते हैं।

लघु गुरु : लघु वर्ण की एक मात्रा होती है, उसका चिह्न 1 तथा गुरु वर्ण की दो मात्राएँ होती हैं। इसका चिह्न S है। सामान्यतः ह्रस्व स्वर वाले वर्ण की एक मात्रा होती है और उसे लघु कहते हैं तथा दीर्घस्वर वाले अक्षर की दो मात्राएँ होती हैं और उसे गुरु कहते हैं।

नायक भेद

नायक के चार भेद माने गये हैं – 1) धीरललित– यह निश्चिंत स्वभाव का कलाओं से प्रेम रखने वाला तथा सुखी होता है। 2) धीरशान्त– सामान्य गुणों से युक्त ब्राह्मण

BHDC-106.indd 32 19-03-2021 08:51:33

अथवा वैश्यादिक नायक को धीरशान्त कहते हैं। 3) धीरोदात्त– धीरोदान्त नायक भावनाओं पर अधिकार रखने वाला, गम्भीर, क्षमावान, अपने मुँह से अपनी प्रशंसा न करने वाला, स्थिर चिन्त का, विनयी तथा दृढ़व्रती होता है। 4) धीरोद्धत – इस नायक में ईर्ष्या और दर्प अधिक होता है, माया और छल करने में चतुर होता है, चचंल क्रोधी तथा आत्मप्रशंसक होता है।

नायिका भेद

प्रथमतः नायिका के तीन भेद हैं – स्वकीया, परकीया और सामान्या। स्वकीया का अर्थ पत्नी, परकीया का अर्थ प्रेमिका या दूसरे की पत्नी और सामान्या का अर्थ है गणिका। स्वकीया के भी तीन भेद है– 1) मुग्धा 2) मध्या 3) प्रगल्भा। परकीया के भी तीन भेद हैं– 1) सुरति गोपना 2) वाग्विदग्धा 3) लक्षिता।

वैसे मनोदशा, आयु एवं परिस्थिति के अनुसार, संस्कृताचार्यों तथा हिंदी के कवि आचार्यों ने भी नायिका के अनेकानेक भेद प्रस्तुत किए हैं।

2.6 उपयोगी पुस्तकें

रस मीमांसा – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

काव्यशास्त्र में रस सिद्धान्त – सच्चिदानन्द चौधरी

भारतीय काव्यशास्त्र – प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह

भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ. रामचन्द्र तिवारी तथा हिंदी आलोचना

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त – डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त

2.7 बोध प्रश्न

1) रीतिकाल में काव्यशास्त्र के विकास का परिचय दीजिए।

2) रस निरूपण के प्रमुख आचार्यों का परिचय दीजिए।

3) रीतिकाल से पूर्व हिंदी में काव्यशास्त्रीय चिंतन पर प्रकाश डालिए।

4) छन्द निरूपण करने वाले कवियों के अवदान को स्पष्ट कीजिए।

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) देखिए भाग 2.3

2) देखिए उपभाग 2.3.2

3) देखिए भाग 2.2

4) देखिए उपभाग 2.3.4

BHDC-106.indd 33 19-03-2021 08:51:33